हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

9 कई स्कूलों में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया

10 महाशिवरात्रि पर्व आज, सजकर तैयार हो गए...

SANSKARAM GROUP OF SCHOOLS

संकल्प से समाधान तक

ADMISSIONS OPEN FOR SESSION : 2026-27

THE TIMES OF INDIA
Awarded with Times School Survey award 2025-26

Engineers 1st Choice — संस्कारम, सपनों को सफलता में बदलने वाला संस्थान।

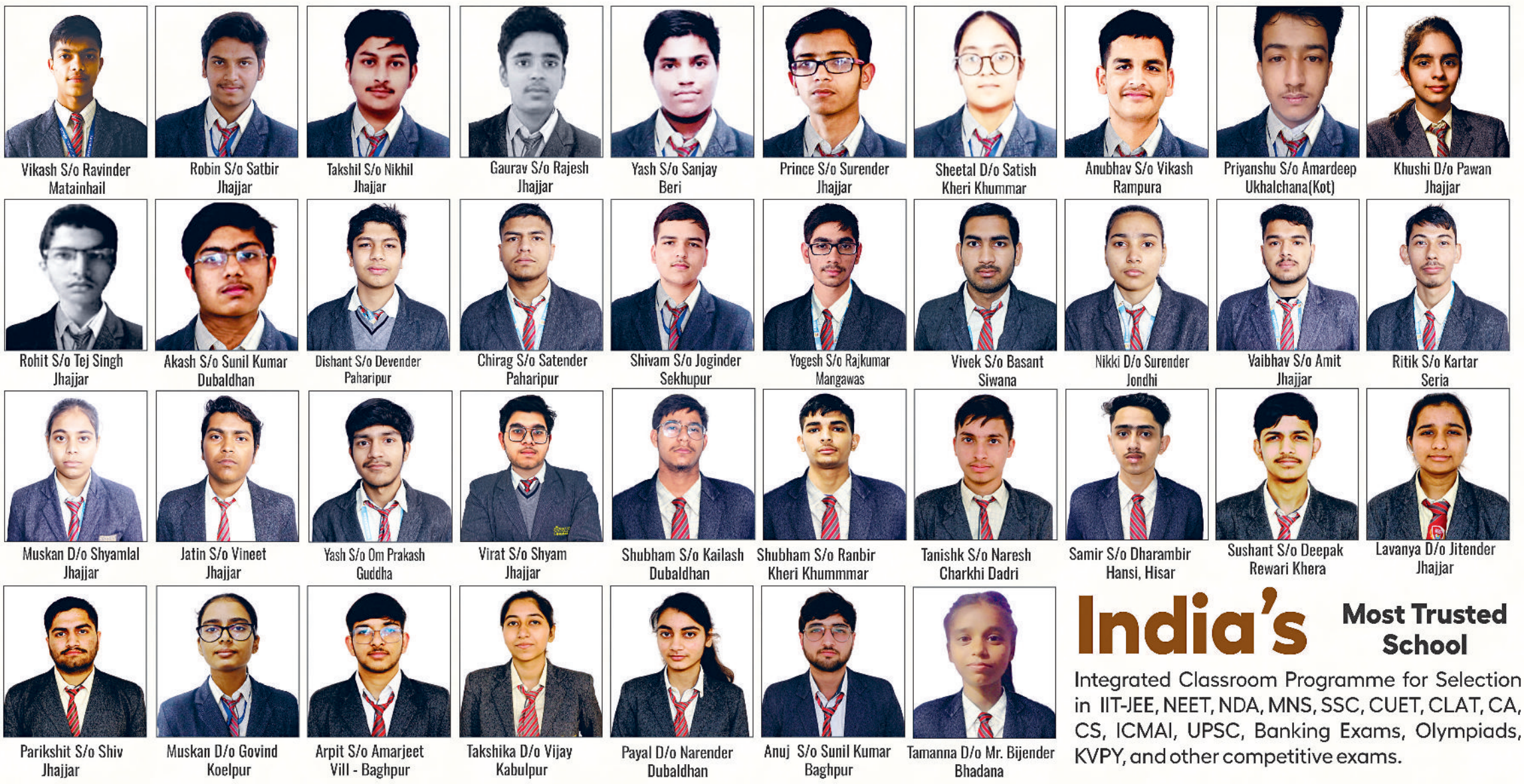

Vikash S/o Ravinder Matainhail
Robin S/o Satbir Jhajjar
Takshil S/o Nikhil Jhajjar
Gaurav S/o Rajesh Jhajjar
Yash S/o Sanjay Beri
Prince S/o Surender Jhajjar
Sheetal D/o Satish Kheri Khummar
Anubhav S/o Vikash Rampura
Priyanshu S/o Amardeep Ukhalchana(Kot)
Khushi D/o Pawan Jhajjar
Rohit S/o Tej Singh Jhajjar
Akash S/o Sunil Kumar Dubaldhan
Dishant S/o Devender Paharipur
Chirag S/o Satender Paharipur
Shivam S/o Joginder Sekhupur
Yogesh S/o Rajkumar Mangawas
Vivek S/o Basant Siwana
Nikki D/o Surender Jondhi
Vaibhav S/o Amit Jhajjar
Ritik S/o Kartar Seria
Muskan D/o Shyamlal Jhajjar
Jatin S/o Vineet Jhajjar
Yash S/o Om Prakash Guddha
Virat S/o Shyam Jhajjar
Shubham S/o Kailash Dubaldhan
Shubham S/o Ranbir Kheri Khummmar
Tanishk S/o Naresh Charkhi Dadri
Samir S/o Dharambir Hansi, Hisar
Sushant S/o Deepak Rewari Khera
Lavanya D/o Jitender Jhajjar
Parikshit S/o Shiv Jhajjar
Muskan D/o Govind Koelpur
Arpit S/o Amarjeet Vill - Baghpur
Takshika D/o Vijay Kabulpur
Payal D/o Narender Dubaldhan
Anuj S/o Sunil Kumar Baghpur
Tamanna D/o Mr. Bijender Bhadana

India's Most Trusted School

Integrated Classroom Programme for Selection in IIT-JEE, NEET, NDA, MNS, SSC, CUET, CLAT, CA, CS, ICMAI, UPSC, Banking Exams, Olympiads, KVPY, and other competitive exams.

बच्चों के डॉक्टर बनने के सपनों को सही दिशा और सफलता दे रहा है संस्कारम।

Jitender S/o Surender Jhajjar
Tanisha D/o Surender Jhajjar
Preeti D/o Sukdarshan Nimli
Ishita D/o Pawan Jhajjar
Rohit S/o Ran Singh Bhindawas
Shirin D/o Yashveer Jhajjar
Ashish S/o Ramesh Jhajjar
Nikhil S/o Vinit Jhajjar
Sonia D/o Mahender Jhajjar
Shakshi D/o Devender Kheri Khummar
Gaurav S/o Dev Singh Jhajjar
Swati D/o Sharad Jhajjar
Rashmi D/o Rakesh Kheri Khummar
Rakhi D/o Ishwar Jhajjar
Sahil S/o Ghanshyam Jhajjar
Khushi D/o Pawan Dhakla
Kajal D/o Rakesh Majra
Anjali D/o Vikash Chamanpura
Charu D/o Satish Masudpur
Dikshu S/o Surender Dubaldhan
Vaibhav S/o Amit Jhajjar
Rashmi D/o Satbir Jhajjar
Kajal D/o Sanjay Gudha
Hiren S/o Sandeep Bhadani
Tannu D/o Devender Jhajjar
Vibhoo S/o Sanjeev Jhajjar
Vedika D/o Tarun Jhajjar
Lavanya D/o Jitender Jhajjar
Jyoti D/o Vedprakash Dujana
Hunny D/o Ramesh Imlota
Komal D/o Dalbir Jhajjar
Nidhi D/o Parambir Silana
Yogita D/o Surender Jhajjar
Disha D/o Sudhir Vill : Koyalpur
Yash S/o Om Praksh Jhajjar

Separate Hostel Facility for Boys & Girls

- Fully safe and supervised hostel facilities
- 24×7 security & trained wardens
- Hygienic, nutritious multi-cuisine meals
- Well-maintained, comfortable living rooms

Class - XII Board School Toppers

98.2% COMMERCE TOPPER YASHIKA D/o RAJEEV JHAJJAR
97.8% ART TOPPER PRACHI D/o SANDEEP BERI
97.2% SCIENCE TOPPER LAVANYA D/o JITENDER BERI
97.2% SCIENCE TOPPER YOGEETA D/o SURENDER JHAJJAR
96.2% PRACHI D/o SOMBIR GIRAWAR
96.2% SRISHTI D/o AJAY JHAJJAR

Class - X Board School Toppers

97.4% BHAVYA D/o SACHIN BERI
97.2% PARI D/o UTTAM GOCHHI
97.2% HARSHIT S/o VIVEK BERI
96.8% PARTH S/o SANDEEP BERI
96.4% BHAVYA D/o PARVEEN JHAJJAR
96.2% KUNJAN D/o NEERAJ DULHERA

JHAJJAR CAMPUS : 8222889860,62
NH.334B, Main Dadri Road, Khatiwas, Jhajjar (Haryana)

PATAUDA CAMPUS : 9053007801,02
NH.352, Patauda, Near Kulana, Jhajjar (Haryana)

खबर संक्षेप

पेस ग्रुप का तृतीय वार्षिक समारोह आज

झज्जर। पेस ग्रुप के निदेशक जय विकास नांदल ने बताया कि संस्थान का तृतीय वार्षिक समारोह रविवार को महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद राम चंद्र जांगड़ा तथा भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ओम प्रकाश धनखड़ उपस्थित रहेंगे। जबकि विशिष्ट अतिथियों में जिप चेयरमैन कप्तान बिरधाना, जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि, एचसीएस अधिकारी रमित यादव, संजय कबलाना शिरकत करेंगे।

चोरी मामले में एक और आरोपी किया गिरफ्तार

बहादुरगढ़। सदर थाना पुलिस ने गाड़ी व नगदी चोरी के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। थाना प्रबंधक सदर बहादुरगढ़ निरीक्षक नरेश कुमार के अनुसार, सोनीपत जिले के विजय ने शिकायत दी थी कि वह सेक्टर-13 बहादुरगढ़ में वाहन सेल-परचेज का कार्य करता है। 30 जनवरी को उसने अपनी कार दुकान के बाहर खड़ी की थी। कुछ देर बाद लौटने पर वाहन सहित उसमें रखी नगदी गायब मिली। गिरफ्तार आरोपी की पहचान विशाल निवासी खरैटी जिला रोहतक को काबू किया।

लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने लगा बदलते मौसम का असर

खांसी और वायरल की चपेट में आ रहे लोग, ओपीडी बढ़ी

दमा रोगियों की बढ़ी परेशानी, जिला प्रशासन ने बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की

ओपीडी में मरीजों की संख्या में 40 फीसदी तक का इजाफा दर्ज किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। ओपीड़ी आने वाले मरीजों की जांच करते हुए चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉक्टर हिमानी सिंह।

पिछले कुछ दिनों से हुए मौसम में बदलाव के चलते सुबह और शाम की ठंड और दिन में निकलने वाली तेज धूप के कारण लोग बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं। मौसम परिवर्तन का यह असर लोगों के स्वास्थ्य पर दिखाई दे रहा है जिस कारण अस्पतालों की ओपीडी में मरीजों की संख्या में 40 फीसदी तक का इजाफा दर्ज किया गया है। स्थानीय नागरिक अस्पताल की चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉक्टर हिमानी सिंह के अनुसार वर्तमान में ओपीडी में आने वाले मरीजों में हर तीसरा व्यक्ति वायरल फीवर व खांसी की समस्या से ग्रसित है। रोजाना ऐसे मरीज आ रहे हैं जो तीन या चार दिनों से बुखार व खांसी से पीड़ित हैं। मौसम में आ रहे इस बदलाव के कारण लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। जिस कारण संक्रमण फैल रहा है। यह मौसम दमा रोगियों के लिए भी मुसीबत बना है। उनके अनुसार हवा में आ रहा बदलाव और वायरल संक्रमण दमा के दौरों को बढ़ा सकता है। ऐसे मरीजों को सांस लेने में तकलीफ और पुरानी खांसी के दोबारा उभरने की शिकायतें हो जाती हैं। खांसी से संक्रमण तेजी से फैलता है, जिससे परिवार के अन्य सदस्य भी इसकी चपेट में आ सकते हैं। ऐसे रोगियों को चाहिए वे सदैव अपने मुंह पर मास्क रखना चाहिए ताकि अन्य सदस्यों को इस प्रकार की परेशानी ना हों।

ये सावधानियां बरतें : चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉक्टर हिमानी सिंह ने बताया कि लोगों को इसके बचाव के लिए जहां मास्क का प्रयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए वहीं धूम्रपान से भी पूरी तरह परहेज करना चाहिए। यह नुकसानदायक होता है। दिनभर में पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं ताकि शरीर से टॉक्सिन्स बाहर निकल सकें। यदि बुखार या खांसी की समस्या बढ़ती है तो घरेलू नुस्खों की बजाय चिकित्सकों की सलाह पर दवा लें। उन्होंने कहा कि खांसी के अधिक दिनों तक रहने पर टीबी का खतरा भी बन जाता है।

सुबह शाम नियमित योग एवं ध्यान करें

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने नागरिकों से बदलते मौसम में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की अपील की है। उन्होंने कहा कि इन दिनों दिन में गर्मी और सुबह-शाम ठंड का असर देखा जा रहा है, जिससे लोग अक्सर लापरवाही बरत लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। उन्होंने कहा कि आमजन पौष्टिक भोजन करें और सुबह शाम नियमित योगा एवं ध्यान करें। प्रत्येक नागरिक को स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले परामर्श की भी अनुपालना करनी चाहिए। बदलते मौसम में बुखार, खांसी,जुकाम, एलर्जी, जोड़ों में दर्द आदि कोई भी लक्षण प्रतीत होने पर तुरंत अपने नजदीकी चिकित्सा केंद्र में स्वास्थ्य जांच करवाएं। खासतौर पर बच्चों और बुजुर्गों को अतिरिक्त सतर्कता रखने की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें।

सार्थक समिति ने वितरित किए कंबल-जूते

बहादुरगढ़। शनिवार को सार्थक परिवार ने मजदूरों की झुग्गियों में जाकर बुजुर्गों और महिलाओं को कुछ कंबल और छोटे बच्चों को उनके साइज के हिसाब से जूते वितरित किए। समिति अध्यक्ष नफे सिंह सार्थक ने कहा कि समिति लगातार अपने सार्थक कदमों को आगे बढ़ा रही है। इस दौरान शिवमंगल सार्थक व हरिचंद सार्थक भी उपस्थित रहे।

बादली कॉलेज में हुई प्लेसमेंट ड्राइव

बहादुरगढ़। बादली के चौधरी धीरपाल राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से एचडीएफसी तथा एक्सिस बैंक द्वारा शनिवार को प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। प्लेसमेंट प्रक्रिया दो चरणों में संपन्न हुई। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. पूनम चौधरी ने कहा कि ऐसी प्लेसमेंट ड्राइव छात्रों को व्यावसायिक जगत से जोड़ने और उनके करियर को मजबूत आधार प्रदान करने में सहायक होती हैं। पहले चरण में विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग की गई, जबकि दूसरे चरण में चयनित विद्यार्थियों का साक्षात्कार आयोजित किया गया। प्लेसमेंट टीम के सदस्य संदीप के अनुसार बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया।

ट्रैक्टर की चपेट में आने से दो बालक घायल

बहादुरगढ़। गांव बाढ़सा में ट्रैक्टर की की चपेट में आने से साइकिल सवार दो बालक घायल हो गए। उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। परिजनों की शिकायत पर बादली थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बाढ़सा के निवासी मुकेश का कहना है कि वह दुकान से सामान लेकर लौट रहा था। उसके साथ सात वर्षीय बेटा आयुष व छह वर्षीय भतीजा लोकेश साइकिल पर आ रहे थे। साइकिल आयुष चला रहा था। जब सड़क क्रास करने लगे तो तेज गति में ट्रैक्टर आया और उनको टक्कर मार दी। मौके से आरोपी ट्रैक्टर चालक फरार हो गया। हमारे दोनों बच्चों को काफी चोट आई। उन्हें एसजीटी अस्पताल बुढेड़ा ले जाया गया। इसके बाद आयुष की गंभीर हालत को देखते हुए उसे मेदांता में भर्ती कराया गया है। ट्रैक्टर चालक की लापरवाही के कारण यह हादसा हुआ।

■ आयुष की गंभीर हालत को देखते हुए मेदांता में भर्ती कराया

कार्यशाला में अंशू और दीपिका को मिला पुरस्कार

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने जीसीएनईपी द्वारा वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसमें भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने विज्ञान और अनुसंधान में नए अवसर के बारे में उन्हें जानकारी दी। दरअसल, डॉ. भारती मिश्रा के साथ महाविद्यालय की 6 छात्राओं ने बीएआरसी के वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित कार्यशाला में हिस्सा लिया। जबकि गणित की सहायक प्रोफेसर रॉकी के साथ बीएससी के 7 छात्रों ने जीसीएनईपी कैंपस में करियर मार्गदर्शन प्राप्त किया। कार्यशाला के अंत में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई। इसमें बीएससी तृतीय वर्ष की छात्रा अंशू तथा बीएससी प्रथम वर्ष की छात्रा दीपिका को पुरस्कार मिला। इस दौरान छात्राओं ने अनेक प्रश्न पूछे। प्रोफेसर रॉकी ने छात्राओं के प्रश्नों के जवाब बड़े सटीक ढंग से दिए। प्रचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने बताया कि विज्ञान के क्षेत्र में कई रोमांचक विकल्प उपलब्ध हैं। छात्राओं के लिए विज्ञान के क्षेत्र करियर बनाने के असीम अवसर उपलब्ध हैं।

ताइक्वांडो टूर्नामेंट में खिलाड़ियों ने जीते मेडल

बीए प्रथम वर्ष के छात्र प्रियांशु को 86 किलोग्राम भाग वर्ग में गोल्ड मेडल

झज्जर। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में आयोजित अंत : महाविद्यालयीय ताइक्वांडो टूर्नामेंट में राजकीय महाविद्यालय दुजाना के दो खिलाड़ियों ने गोल्ड मेडल जीत कर संस्थान का नाम रोशन किया है। शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रोफेसर डॉक्टर अजय कुमार ने बताया कि उनके संस्थान के बीए प्रथम वर्ष के छात्र प्रियांशु ने 86 किलोग्राम भाग वर्ग व बीए द्वितीय वर्ष के छात्र सूर्यनारायण ने 80 किलोग्राम भार वर्ग में गोल्ड मेडल जीता जबकि बीए तृतीय वर्ष के कृष्ण ने 68 किलो ग्राम भारवर्ग में ब्रांच मेडल हासिल किया। महाविद्यालय पहुंचने पर प्राचार्य डॉक्टर राजेश कुमार ने शिक्षकों के साथ मिलकर विजेता खिलाड़ियों का स्वागत किया। इस मौके पर डॉक्टर अनिल, डॉक्टर सीमा कुंडू, डॉक्टर सुनीता सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

कैंटर की चपेट में आने से साइकिल सवार की मौत

बहादुरगढ़। एमआईई में रोहतक-दिल्ली मार्ग पर कैंटर की चपेट में आने से साइकिल सवार व्यक्ति की मौत हो गई। वह घर से ड्यूटी जाते वक्त हादसे का शिकार हुआ। परिजनों के बयान के बाद शव का पोस्टमार्टम हो पाएगा। मृतक की पहचान मुन्ना यादव के रूप में हुई है। वह बिहार के भागलपुर का रहने वाला था। फिलहाल नजदीक स्थित दिल्ली की कच्ची कॉलोनी में अपने साढ़ू धीरज के साथ रह रहा था और एमआईई स्थित एक कंपनी में काम करता था। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार को साइकिल पर सवार होकर वह अपनी कंपनी जा रहा था। जब रोहतक-दिल्ली रोड पर मेट्रो पिलर नंबर 785 के पास पहुंचा तो सामने से आ रहे कैंटर के साथ टक्कर हो गई। हादसे में उसे गंभीर चोट आई और नजदीक स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। कुछ देर बाद ईलाज के दौरान उसे मृत घोषित कर दिया गया। सूचना पाकर एमआईई चौकी से पुलिस अस्पताल में पहुंची और शव कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई शुरू की। परिजनों के बयान लेने के बाद शनिवार को पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई गई। इस संबंध में धीरज की शिकायत पर आरोपी कैंटर चालक के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। कैंटर का नंबर पुलिस को मिल गया है। उस आधार पर पुलिस फरार आरोपी तक पहुंचने का प्रयास कर रही है।

मकान निर्माण के दौरान नीचे गिरने से राजमिस्त्री की मौत

झज्जर। क्षेत्र के गांव सिलानी में एक मकान निर्माण में जुटे राजमिस्त्री का संतुलन बिगड़ गया और वह नीचे आ गिरा। इस घटना में आई गंभीर चोटों के कारण उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान मूल रूप से यूपी मुरादाबाद के रहने वाले करीब साठ वर्षीय मुन्नवर हुसैन पुत्र मेहंदी हुसैन के तौर हुई है। मामले के जांच अधिकारी प्रदीप कुमार ने बताया कि मुन्नवर पिछले करीब छह वर्षों से सिलानी क्षेत्र में रहकर राजमिस्त्री का कार्य कर रहा था। उसके दो बेटे भी उसी के साथ काम करते हैं। शनिवार की दोपहर करीब साढ़े बारह बजे जब एक दीवार पर काम कर रहा था तो उसका संतुलन बिगड़ गया और वह अचानक नीचे जमीन पर आ गिरा। इस दौरान नीचे रखी पत्थर की टुकड़ियों के कारण उसे सिर पर गंभीर चोट लगी। परिजन उसे गंभीर हालत में अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस द्वारा इस संबंध में इतिफाकिया करते हुए पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

झज्जर। नागरिक अस्पताल परिसर में पोस्टमार्टम के लिए कागजी कार्रवाई करते हुए पुलिसकर्मी।

हवाई फायरिंग के मामले में शिकायतकर्ता पर केस

बहादुरगढ़। टांडाहेड़ी में मकान के बाहर हुई हवाई फायरिंग के मामले में अब शिकायतकर्ता के खिलाफ भी केस दर्ज हुआ है। उस पर घर बुलाकर जान से मारने की धमकी देने और ईंटों से हमला करने का आरोप लगा है। टांडाहेड़ी के निवासी अमित का कहना है कि गत छह फरवरी को वह काम से कहीं बाहर गया था। उस दिन साढ़े 12 बजे गांव का निवासी दलबीर ट्रैक्टर पर हमारे घर के बाहर आया। आते ही परिवार के साथ गाली गलोच की और धमकी दी। साथ ही ये भी कहा कि बातचीत के लिए अमित को हमारे घर भेज देना। उसी रात मैं बातचीत के लिए दलबीर के घर गया तो उसने दरवाजा बंद कर लिया और छत पर चढ़कर गालियां देते हुए ईंट बरसानी शुरू कर दी। सिर व कंधे में ईंट लगने से कुछ देर के लिए मैं बेसुध हुआ। फिर होश में आने के बाद अपनी गाड़ी की तरफ जाने लगा तो आरोपी ने फिर से पत्थर बरसाने शुरू किए। मैंने बचाव में हवाई फायर किया। किसी तरह से वहां से बचकर निकला और अस्पताल में भर्ती हुआ। इस शिकायत पर सदर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

स्कूटी की चपेट में आने से एक घायल

बहादुरगढ़। सिद्धीपुर लोवा के निकट स्कूटी की चपेट में आने से एक व्यक्ति घायल हो गया। उसे काफी चोट आई है। खरमाण के निवासी आजाद सिंह का कहना है कि उसके पिता कैर डिपो से ड्यूटी कर लौट रहे थे। जब सिद्धीपुर लोवा के निकट पहुंचे तो सड़क दुर्घटना में घायल हो गए। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। अपने स्तर पर जांच की तो पता चला कि स्कूटी सवार चालक के कारण यह हादसा हुआ। आरोपी स्कूटी चालक कैर गांव का रहने वाला है। उधर, शिकायत के आधार पर सदर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

कैंप में 308 की आंखें जांची 80 ने करवाई फिजियोथेरेपी

बहादुरगढ़। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष राजपाल जांगड़ा के 71वें जन्मदिवस पर आयोजित निशुल्क कैंप में 308 लोगों की नेत्र जांच की गई। जबकि 80 लोगों ने फिजियोथेरेपी करवाई। इससे पहल हवन में आहुति डालकर उनके स्वस्थ जीवन की कामना की गई। लॉर्ड शिवा नेत्र चिकित्सालय द्वारा आयोजित कैंप में 308 लोगों ने आंखों की जांच करवाई। साथ ही उन्हें निःशुल्क दवाइयां भी वितरित की गई। फिजियोथेरेपी कैंप का 80 लोगों ने लाभ उठाया। कार्यक्रम में भाजपा नेता दिनेश कौशिक, पूर्व चेयरमैन रवि खत्री, कर्मवीर राठी, रमेश राठी, चेयरमैन विनोद कौशिक, संजय जून, नरेश भारद्वाज, मुकेश कौशिक, रामनिवास सैनी, ऋषि भारद्वाज, ओमवीर राठी, अनिल सिंघल, योगेश धनखड़, आदि ने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी।

बरहाणा में अज्ञात कारणों से नर्सिंग छात्रा ने फांसी लगाकर दी जान

झज्जर। क्षेत्र के गांव बरहाणा में अज्ञात कारणों के चलते एक युवती ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतका की पहचान करीब 19 वर्षीया निकिता पुत्री सुधीर के तौर पर हुई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार निकिता बारहवीं कक्षा के बाद नर्सिंग की छात्रा थी। शुक्रवार की रात उसने अपने घर चौबारे में फांसी लगा ली। परिजनों को जब पता चला तो वे उसे गंभीर अवस्था में सीएचसी डीघल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने अस्पताल पहुंच कर परिजनों से मामले की जानकारी लेते हुए शव को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल भिजवाया। इसके बाद पुलिस ने घटना स्थल का मौका मुआयना भी किया तथा एफएसएल टीम द्वारा आवश्यक साक्ष्य भी जुटाए गए। शनिवार को मृतका के शव का पोस्टमार्टम कराया गया। पुलिस द्वारा मृतका के पिता के बयान पर इतिफाकिया कार्रवाई की गई है। मामले के जांच अधिकारी अशोक कुमार ने बताया कि पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। को ले जाते हुए परिजन।

वार्षिक एथलेटिक मीट में खिलाड़ियों ने दिखाई प्रतिभा

1500 मीटर रेस में तमन्ना रही प्रथम

■ महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में दो दिवसीय वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन किया गया। इस 10वीं वार्षिक एथलेटिक मीट में महाराजा अग्रसेन एजुकेशन ट्रस्ट के प्रधान राजकुमार गोयल ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करते हुए प्रतियोगिताओं की शुरू की। प्राचार्या डॉक्टर नीलम गर्ग ने अतिथियों का स्वागत किया। मंच संचालन डॉक्टर नीतू जैन और कनिता शर्मा द्वारा किया गया। इसके उपरांत महाविद्यालय की छात्राओं ने मार्चपासट निकालते हुए मुख्यातिथि को सलामी दी। मुख्यातिथि ने खेलों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए खिलाड़ियों को खेल भावना से खेलने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि खेल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य और सहनशीलता को मजबूत करते हैं बल्कि अनुशासन, टीम भावना, आत्म-विश्वास और नेतृत्व क्षमता को भी बढ़ाते हैं।

ये रहे प्रतियोगिता परिणाम : घोषित प्रतियोगिता परिणामों में 100 मीटर रेस में सरोज ने पहला, तन्नु ने दूसरा व निकिता ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर रेस में तमन्ना प्रथम, प्रिया द्वितीय व मोनिका तृतीय रही। 1500 मीटर रेस में तमन्ना पहले, ऊषा दूसरे व रोशनी तीसरे स्थान पर रही। थ्री लैग रेस में अन्नु व खुशी की टीम को पहला, प्रिया व स्नेह को दूसरा, ईशिका व ऊषा की टीम को तीसरा स्थान मिला। स्पून और लेमन रेस में ऊषा प्रथम, अंजू द्वितीय व मनीषा तृतीय रही। शॉटपुट स्पर्धा में निधि को पहला, स्नेहा को दूसरा व सलोनी को तीसरा स्थान मिला। डिस्कस थ्रो में निधि प्रथम, सलोनी द्वितीय व स्नेहा तृतीय रही। टग ऑफ वार में हिमानी,अंजू, संगीता, कौशल, मोनिका, स्नेहा, प्रिया, तमन्ना, सविता, निशा, निकिता, रीना, अनु, स्नेहा, पायल, आशु, ज्योति, अंजलि, योगिता, सलोनी व साक्षी की टीम विजेता रही।

संस्कारम स्कूल में अभिव्यक्ति दिवस पर विद्यार्थियों ने दी रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुति

■ अभिव्यक्ति केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि हृदय की संवेदनाओं को साकार करने की प्रक्रिया : डॉ. महिपाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

संस्कारम विश्वविद्यालय में शनिवार को अभिव्यक्ति दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने प्रेम, कृतज्ञता और मानवीय मूल्यों पर आधारित विविध रंगारंग प्रस्तुतियां देते हुए मातृ-पितृ दिवस और प्रेम के सकारात्मक स्वरूप को केंद्र में रखकर विशेष संदेश दिए। कार्यक्रम की शुरूआत विश्वविद्यालय के चांसलर डॉक्टर महिपाल द्वारा की गई।

उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि हृदय की संवेदनाओं को साकार करने की प्रक्रिया है। प्रेम व्यक्ति को जोड़ने का कार्य करता है। यह समाज में समरसता, सहिष्णुता और आपसी सम्मान की भावना को सुदृढ़ करता है। आज का दिन केवल मित्रों या जीवनसाथियों के लिए नहीं, बल्कि उन माता-पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का भी अवसर है, जिन्होंने हमें जन्म दिया, पोषण किया और जीवन के प्रत्येक चरण में मार्गदर्शन दिया है। उन्होंने विद्यार्थियों को संदेश दिया कि वे अपने जीवन में प्रेम को मूल्य, कर्त्तव्य और जिम्मेदारी के रूप में अपनाएं।

विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर गुरुदयाल ने कहा कि जब हम अपने माता-पिता, गुरुजनों और समाज के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करते हैं, तभी हमारे संस्कारों की सार्थकता सिद्ध होती है।

खबर संक्षेप

विश्व रेडियो दिवस के उपलक्ष्य में शुरू किया जागरूकता अभियान

झज्जर। विश्व रेडियो दिवस के उपलक्ष्य में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा एक विशेष जागरुकता अभियान का आयोजन किया गया।

सीजेएम एवं डीएलएसए सचिव विशाल ने बताया कि अभियान का उद्देश्य डिजिटल युग की चुनौतियां, साइबर सुरक्षा, तथा सोशल मीडिया के उपयोग को लेकर आमजन को जागरुक करना रहा। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से दो माह तक चलने वाले इस राष्ट्रव्यापी अभियान डिजिटल दुनिया का प्रबंध साझा करने से पहले सोचे का अभियान चलाया जा रहा है। अभियान को जिला स्तर पर रेडियो प्रसारण, सोशल मीडिया पोस्ट और प्रिंट मीडिया के माध्यम से घर-घर तक पहुंचा जा रहा है।

महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में बस अड्डे पर भंडारा कल

बहादुरगढ़। हरियाणा राज्य परिवहन के सौजन्य से महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में 16 फरवरी को बाईपास स्थित नए बस अड्डे में देशी घी के भंडारे का आयोजन किया जाएगा। समस्त रोडवेज कर्मचारियों की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत रविवार 15 फरवरी को हवन के साथ होगी। रविवार को नए और पुराने अड्डे में हवन होगा। इसके बाद 16 फरवरी को नए अड्डे पर भंडारा किया जाएगा।

वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में श्रद्धांजलि सभा आयोजित

पुलवामा के शहीदों को दी सलामी

बहादुरगढ़। पुलवामा के शहीदों को नमन करती स्वयंसेविकाएं। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। अमर शहीदों को मोमबती जलाकर व मौन धारण कर नमन करते प्रबुद्धजन।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में पुलवामा हमले की बरसी के अवसर पर एनएसएस एवं वाईआरसी इकाई ने श्रद्धांजलि सभा की। कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वयंसेविकाओं ने 7 साल पहले पुलवामा के आतंकी हमले में शहीद हुए अमर शहीदों को सलामी दी। उनके अदम्य साहस, त्याग और देशभक्ति को नमन किया। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय परिसर में पौधरोपण भी किया गया। प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि पुलवामा के वीर शहीदों का बलिदान सदैव राष्ट्र को प्रेरित करता रहेगा। हमें उनके साहस, अनुशासन और देशप्रेम से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में अपना सक्रिय योगदान देना चाहिए। पौधरोपण केवल एक क्रिया नहीं, बल्कि हमारे कृतज्ञ हृदय की अभिव्यक्ति है। उन्होंने स्वयंसेविकाओं को राष्ट्रसेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं मानवता के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

मोमबत्तियां जलाकर व दो मिनट का मौन रखकर अमर शहीदों को नमन किया

झज्जर। एक आंतकी साजिश के कायराना हमले में पुलवामा में शहीद हुए सीआरपीएफ के 40 जवानों को शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर प्रबुद्धजनों द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। उन्होंने शहीद अमर रहे, वंदे मातरम, भारत माता की जय, जब तक सूरज चांद रहेगा, शहीदों का नाम रहेगा आदि नारे लगाए। लोगों ने मोमबत्तियां जलाकर व दो मिनट का मौन रखकर अपने अमर शहीदों को नमन किया। इस अवसर पर कैप्टन कुलदीप गुलिया, कैप्टन सतबीर बड़क, रमेश जाखड़, राजबीर राहर, रोहतास तलाव, सुरेंद्र, शिवम प्रधान, विष्णु जांगड़ा, गौरव, बिजेंद्र सिंह, सुकर्मपाल, सरोज, बिमला, शीला देवी, सुमित्रा , दिनेश, संजय , सोम कुमार सहित अन्य भी मौजूद रहे।

पुलवामा के शहीदों की याद में 103 ने किया रक्तदान

बहादुरगढ़। पुलवामा आतंकी हमले में देश की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान देने वाले अमर शहीदों की पुण्य स्मृति में छारा गांव में आयोजित शिविर में 103 लोगों ने रक्तदान किया। इंडेपथ विजन फाउंडेशन, सेवा ट्रस्ट यूके और मुस्कान फाउंडेशन छारा द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कैंप में सैकड़ों लोगों का स्वास्थ्य भी जांचा गया। छारा की बाबा संतोक दास धर्मशाला में आयोजित शिविर में देशभक्ति, सामाजिक एकता और मानव सेवा का अद्वितीय संदेश दिया गया। कैंप में 103 लोगों ने रक्तदान किया। सभी रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। पीजीआईएमएस रोहतक की अनुभवी टीम ने रक्त संचय किया। इसके साथ ही डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में ग्रामीणों की ब्लड प्रेशर, शुगर एवं अन्य आवश्यक जांचें कर उन्हें उचित चिकित्सकीय परामर्श दिया गया। कैंप में नगर परिषद बेरी के वाईस चेयरमैन संदीप कादयान तथा मातन गांव के सरपंच मोनू विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने रक्तदाताओं को प्रोत्साहित किया। मुस्कान फाउंडेशन के अध्यक्ष मास्टर प्रदीप छारा ने कहा कि शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कर्मों से दी जाती है। रक्तदान के माध्यम से किसी जरूरतमंद को नया जीवन देना ही शहीदों के बलिदान का सम्मान है। पंचायत सदस्य मास्टर अनिल दलाल ने सभी रक्तदाताओं, सहयोगी संस्थाओं, कलाकारों और चिकित्सा टीम का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध कलाकार जोगेंद्र कुण्डू, दीपक कपूर व रामबीर आर्यन ने देशभक्ति से ओत-प्रोत संदेशों ने युवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया। इस अवसर पर कैप्टन जीत सिंह, देवराज पंडित, राकेश, सामाजिक कार्यकर्ता ललिता राठी, रविंद्र दलाल, पोपराम ठेकेदार, नीर पहलवान, धर्मबीर मास्टर, संदीप फौजी, अंशु, सोनू फौजी, राकेश दलाल, सविता दलाल, एकता, सूरजमल फौजी आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। छारा में लगे कैंप में रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करते आयोजक।

कई स्कूलों में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया

माता-पिता ही बच्चों के होते हैं प्रथम गुरु

बहादुरगढ़। राणा प्रताप स्कूल में मातृ पितृ पूजन करते बच्चे। फोटो : हरिभूमि

- विद्यार्थियों को मातृ पितृ पूजन का महत्व बताया
- विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता का तिलक कर, पुष्प अर्पित कर एवं आरती उतारकर उनका पूजन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

संत आसाराम आश्रम की योग वेदांत सेवा समिति द्वारा शहर के विभिन्न विद्यालयों में मातृ-पितृ पूजन दिवस श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता का तिलक कर, पुष्प अर्पित कर एवं आरती उतारकर उनका पूजन किया। शनिवार को शहर के राणा प्रताप स्कूल, एसआर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, जगदीश मेमोरियल स्कूल, होली चाइल्ड स्कूल, छोटूराम स्कूल तथा गवर्नमेंट स्कूल में यह आयोजित किया गया। विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनके सम्मान का संकल्प लिया। आश्रम की ओर से सेवादार वीना बत्रा, आरती, पूनम, आभा बहन, भावना, अनीता ने इसमें विशेष सहयोग दिया। समिति प्रवक्ता नवीन मल्होत्रा ने विद्यार्थियों को मातृ पितृ पूजन का महत्व बताते हुए कहा कि माता-पिता ही बच्चों के प्रथम गुरु होते हैं। उनके प्रति सम्मान, सेवा व आज्ञापालन ही सच्चे संस्कारों की पहचान है।

ग्रामीणों को दिलाई बाल विवाह की रोकथाम संबंधी शपथ

झज्जर। ग्रामीणों को बाल विवाह की रोकथाम संबंधी शपथ दिलाते हुए टीम सदस्य। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण व एमडीडी ऑफ इंडिया संस्था द्वारा चलाई जा रही बाल विवाह मुक्ति रथ यात्रा शनिवार को सत्रहवें दिन जिले के गांव साल्हावास, ढाणा, जमालपुर, बिठला, भूरावास, मूंदसा गांव पहुंची। टीम सदस्यों द्वारा गांव के विभिन्न चौक-चौराहों पर कार्यक्रम का आयोजन ग्रामीणों को बाल विवाह के दुष्परिणामों की जानकारी देते हुए उन्हें इसकी रोकथाम के लिए प्रेरित किया। इस दौरान टीम सदस्यों द्वारा ग्रामीणों को बाल विवाह की रोकथाम संबंधी शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रमों के दौरान बिठला में सरपंच नीतू रानी, भूरावास में सरपंच सुनील देवी, बलवान आदि ने भी लोगों को बाल विवाह की रोकथाम करने में सहयोग के लिए प्रेरित किया।

किसान के खेत से मोटर चोरी

बहादुरगढ़। गांव मांडोठी स्थित एक किसान के खेत में ट्यूबवेल पर लगाई गई मोटर चोरी हो गई।

- मांडोठी चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी
- किसान खेत में गया तो वारदात का पता चला

शुक्रवार को जब किसान अपने खेत में गया तो वारदात का पता चला। इसके बाद उसने पुलिस को शिकायत दी। किसान रमेश का कहना है कि खरहर रोड पर उसके खेत हैं, जहां से मोटर चोरी हुई है। वहीं, मांडोठी चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

विधायक ने विद्यार्थियों को किया सम्मानित

शिक्षा जीवन की सबसे बड़ी पूंजी, प्रत्येक विद्यार्थी को अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए

- विधायक जून ने प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विद्यार्थियों की रचनात्मकता और वैज्ञानिक सोच की सराहना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

श्री चैतन्या टेक्नो स्कूल के वार्षिक उत्सव में विधायक राजेश जून ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए विभिन्न विज्ञान एवं शैक्षणिक विज्ञान प्रोजेक्ट्स की प्रदर्शनी भी लगाई गई। विधायक राजेश जून ने प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विद्यार्थियों की रचनात्मकता और वैज्ञानिक सोच की सराहना की। राजेश जून ने कहा कि शिक्षा जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। प्रत्येक विद्यार्थी को अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और उसे प्राप्त करने तक निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिए। निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प ही सफलता की कुंजी है। जून ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाते विधायक राजेश जून। फोटो : हरिभूमि

दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को दी विदाई

झज्जर। विदाई समारोह में उपस्थित शिक्षक एवं विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। हिमालय हाई स्कूल में शनिवार को विदाई समारोह का आयोजन किया गया। नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को विदाई दी। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय संचालक दीपक कश्यप ने प्राचार्या लीला देवी व शिक्षकों के साथ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। उन्होंने विदा होने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें जीवन में अनुशासन, परिश्रम के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अपने सीनियर्स के सम्मान में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी दी। समारोह में विशेष रूप से उपस्थित समिति अध्यक्षा करीब 93 वर्षीया सुभद्रा देवी ने विद्यार्थियों के साथ अपने जीवन के अनुभव सांझा किए।

सेक्टर-2 में मनाई 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती

- बीके अंजलि दीदी ने सभी के उत्तम स्वास्थ्य और सुखद भविष्य की मंगल कामना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेक्टर-2 स्थित सेवाकेंद्र पर 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती का उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भाजपा नेता सेवामूर्ति दिनेश कौशिक और सेवानिवृत्त असिस्टेंट डायरेक्टर अशोक शर्मा ने संस्थान के कार्यों की सराहना करते हुए समाज में शांति और भाईचारे के संदेश को आवश्यक बताया। मुख्य संचालिका बीके अंजलि दीदी ने सभी के उत्तम स्वास्थ्य और सुखद भविष्य की मंगल कामना करते हुए कहा कि परमात्मा शिव का अवतरण हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रतीक है। सेवाकेंद्र संचालिका बीके विनीता दीदी ने महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें अपने भीतर के पांच विकारों—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का त्याग कर स्वयं को पवित्र बनाना है। इस दौरान शिव पिता परमात्मा के ध्वज (झंडे) का वितरण किया गया। समारोह के समापन पर सभी श्रद्धालुओं ने शिव ध्वज के नीचे खड़े होकर अपने जीवन को सफल बनाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा ली।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम में केक काटती ब्रह्माकुमारियां व दिनेश कौशिक। फोटो : हरिभूमि

अंतर महाविद्यालयीय प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय दुजाना में आरंभ शीर्षक से अंतर महाविद्यालयीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्राचार्य डॉक्टर राजेश कुमार ने की। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के अंदर छिपी हुई प्रतिभा को सामने लाने का सशक्त मंच है। उन्होंने विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करके आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस रंगारंग कार्यक्रम में 12 महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने समूह गीत, एकल गीत, एकल नृत्य, समूह नृत्य, नृत्य, भजन, गीत, हिंदी, अंग्रेजी व हरियाणवीं कविता पाठ प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए अपनी प्रतिभा दिखाई। हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता में राजकीय महाविद्यालय दुजाना की छात्रा प्रियांशी ने प्रथम, राजकीय महाविद्यालय दूबलधन की छात्रा हिना ने द्वितीय व इंदिरा प्रियदर्शनी महिला महाविद्यालय की छात्रा निशा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित अतिथि एवं शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

माउंट व्यू सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हुई अभिभावक-शिक्षक बैठक

598 विद्यार्थियों व अभिभावकों का स्वास्थ्य जांचा

- पीटीएम में अध्यापकों ने विद्यार्थियों की पढ़ाई, व्यवहार उपस्थिति एवं परीक्षा परिणामों पर विस्तार से चर्चा की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के माउंट व्यू सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को विद्यार्थियों व अभिभावकों के लिए पीटीएम के साथ ही एक निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. संजय हॉस्पिटल के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने कैंप में 598 विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के स्वास्थ्य की जांच की गई।

स्कूल निदेशक देवेंद्र लाठर ने बताया कि विद्यार्थियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा अभिभावकों को उनके बच्चों की शैक्षणिक प्रगति से अवगत करवाने के लिए यह विशेष आयोजन किया गया। डॉ. संजय हॉस्पिटल के सहयोग से आयोजित कैंप में अस्थि रोग विशेष डॉ. संजय सिंह, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. तरुणा, डॉ. आराधना, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ.रामनतुली, दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. रोहित, डॉ. आशु तथा डॉ. रमेश की टीम ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की सामान्य स्वास्थ्य जांच की। डॉ. संजय सिंह ने संतुलित आहार, स्वच्छता एवं नियमित व्यायाम के महत्व पर भी महत्वपूर्ण जानकारी दी। पीटीएम में अध्यापकों ने विद्यार्थियों की पढ़ाई, व्यवहार, उपस्थिति एवं परीक्षा परिणामों पर विस्तार से चर्चा की। अभिभावकों ने भी अपने सुझाव प्रस्तुत किए और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय प्रशासन के प्रयासों की सराहना की। प्रधानाचार्य सुरेंद्र छिल्लर ने बताया कि शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य भी अत्यंत आवश्यक है। अभिभावकों से बच्चों की नियमित दिनचर्या, संतुलित भोजन और समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण पर ध्यान देने का आग्रह किया।

बहादुरगढ़। कैंप में विद्यार्थियों व अभिभावकों की जांच करते चिकित्सक। फोटो : हरिभूमि

नशेड़ी पूरे राष्ट्र को कर सकता है कुप्रभावित

झज्जर। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में शनिवार को नशा निषेध क्लब के तत्वावधान में नशीले पदार्थों के प्रति जागरूक करने के लिए विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. प्रताप फलसवाल ने की। उन्होंने कहा कि नशे की लत में पड़ने वाला व्यक्ति पूरे राष्ट्र को कुप्रभावित कर सकता है। इसलिए हमें इस प्रकार की बुराई को मिटाने के लिए न केवल अपने आप को नशे से दूर रखना है बल्कि अपने आस पास के क्षेत्र के लोगों को भी समय-समय पर जागरूक करते रहना है ताकि सभी नागरिक नशे से दूर रहें और स्वस्थ रहें। मुख्य वक्ता प्रदीप कुमार ने कहा कि नशा केवल मादक पदार्थों का सेवन करना ही नहीं होता बल्कि किसी भी वस्तु का अधिक मात्रा में सेवन करना भी हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। इस प्रकार हम खुद को नशे से दूर रखते हुए आदर्श समाज की स्थापना करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कार्यक्रम का संयोजन धूम्रपान व तंबाकू उत्पाद नियंत्रण क्लब के नोडल अधिकारी डॉक्टर कुलदीप ने किया। मंच संचालन हिंदी प्राध्यापक शिवशंकर ने किया। इस अवसर पर अंग्रेजी विभागाध्यक्ष श्रीकृष्ण चाहर, गणित विभागाध्यक्ष डॉ. संदीप, अर्थशास्त्र प्रवक्ता डॉ. मनोज सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए आवेदन शुरू

झज्जर। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 के दौरान एसएमएएम योजना के तहत किसानों को 40 से 50 प्रतिशत अनुदान पर कृषि यंत्र उपलब्ध करवाने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि योजना का लाभ लेने के लिए किसान 16 फरवरी तक विभाग की वेबसाइट एग्री हरियाणा.जीओवी.आईएन पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। चयनित किसान अनुदान पर प्राप्त कृषि यंत्र को पांच वर्षों तक बेच नहीं सकेगा।

लाइनपार मकान के बाहर से टैंपो चोरी

बहादुरगढ़। लाइनपार के बलजीत नगर में एक मकान के बाहर से टैंपो चोरी हो गया। वाहन मालिक की ओर से पुलिस को शिकायत दे दी गई है। शिकायतकर्ता अंजू का कहना है कि उसके पति काम के सिलसिले में कहीं गए हुए हैं। हमारा टैंपो आठ फरवरी को गली में मकान के बाहर खड़ा था। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया। तब से अब तक तलाशते रहे लेकिन नहीं मिला। लाइनपार थाना पुलिस ने चोरी का केस दर्ज किया है।

सेक्टर-2 में हिंदू सम्मेलन 22 को

बहादुरगढ़। शहर के सेक्टर-2 में पुलिस स्टेशन के सामने आगामी 22 फरवरी को हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सम्मेलन में हिंदू एकता की मजबूती पर जोर दिया जाएगा। सत्यपाल सिंह ने बताया कार्यक्रम का उद्देश्य सांस्कृतिक जागरूकता, संगठन, आध्यात्मिक मार्गदर्शन व सनातन मूल्यों के संरक्षण को बढ़ावा देना है। सम्मेलन में वक्ता धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विषयों पर विचार रखेंगे। मुख्य वक्ता के रूप में वेदांत आश्रम बहादुरगढ़ के आचार्य श्रीभगवान महाराज तथा सुप्रीम कोर्ट में उत्तराखंड सरकार के एडवोकेट जनरल अधिवक्ता संजीव उनियाल शिरकत करेंगे।

पुलिस ने दो युवक अवैध हथियार सहित पकड़े

बहादुरगढ़। पुलिस की एवीटी सैल ने बादली के निकट बाईपास से गाड़ी में सवार दो युवकों को अवैध हथियार सहित काबू किया। आरोपियों के पास से एक देशी पिस्तौल व दो कारतूस बरामद हुए हैं। इनकी पहचान प्रवीण व सक्षम के रूप में हुई है। आरोपियों के खिलाफ बादली थाने में केस दर्ज किया गया है।

शहर में कई स्थानों पर होंगे जागरण और भंडारे

महाशिवरात्रि पर्व आज, सजकर तैयार हो गए शिवालय, उमड़ेगी आस्था

बिरधाना गांव में होगा कुश्ती दंगल

प्रथम विजेता को एक लाख का पुरस्कार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

महाशिवरात्रि का पावन पर्व श्रद्धा और उल्लास के साथ रविवार को मनाया जाएगा। इसके लिए शहर के शिवालय सजकर तैयार हो गए है और श्रद्धालुओं द्वारा भी पूजा अर्चना की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। शहर के बाबा प्रसाद गिरी मंदिर, प्राचीन बूढ़ा महादेव मंदिर, पंडित लेखराज मंदिर, देवालय आश्रम मंदिर, गोपाल मंदिर, प्राचीन शिवमंदिर डाबरा, बिटौडिया शिव मंदिर, बेरी गेट स्थित शिव मंदिर सहित तमाम मंदिरों में साज सज्जा की गई है। इसके अलावा गांव बिरधाना में जहां कुश्ती दंगल का आयोजन किया जाएगा, वहीं शहर में बूढ़ा महादेव मंदिर में जागरण और भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा शनिवार को क्षेत्र के गांव भदाना की चौपाल में महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर शिव का विशाल रेखाचित्र बनाते हुए नमन किया गया।

झज्जर। बाबा कांशीगिरी मंदिर में शनिवार को सजकर तैयार शिवालय। फोटो: हरिभूमि

कई छोटी कुश्तियां भी होंगी

क्षेत्र के गांव बिरधाना में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में रविवार को विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन किया जाएगा। आयोजक समिति के प्रवक्ता ने बताया कि कुश्ती दंगल में विजेता पहलवानों को प्रथम पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपये, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 51 हजार रुपये तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में 31 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। इसके अलावा कई छोटी कुश्तियां भी कराई जाएंगी। इसके अलावा प्राचीन श्री बूढ़ा महादेव मंदिर में जागरण व भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

झज्जर। भदाना की चौपाल में बनाया गया शिव का विशाल रेखाचित्र।

भदाना गांव की चौपाल में बनाया गया विशाल रेखाचित्र

क्षेत्र के गांव भदाना की चौपाल में मुकेश शर्मा व बेटी अंशुल शर्मा ने महाशिवरात्रि पर्व की पूर्व संध्या पर भगवान शिव शंकर का एक रंगोली रेखाचित्र बनकर भगवान शिव को किया नमन किया। मुकेश शर्मा ने बताया कि महाशिवरात्रि व्रत का करने से भगवान शिव सभी मनोकामना पूर्ण करते है और भगवान शिव की कृपा भी बनी रहती है। चौपाल रंगोली में पूर्व सैनिक देवीदत्त शर्मा, सूबेदार सुभाष शर्मा, रमेश कौशिक, नसीब कौशिक, अमीर सिंह, वेदपाल शर्मा, सतीश कौशिक, केशव शर्मा, अर्जुन शर्मा, अलीशा शर्मा सहित काफी संख्या में लोगों ने भगवान शिव को नमन किया।

सुनील दत्त शास्त्री बोले

महाशिवरात्रि पर जलाभिषेक करने का है विशेष महत्व

शोभायात्रा में भगवान की मूर्ति को विशेष रूप से सजाया गया जो आकर्षण का केंद्र रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

शोभा यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के जयकारों से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया

महाशिवरात्रि के पावन पर्व के उपलक्ष्य में बेरी गेट स्थित शिव मंदिर से जय भोले की जयकारों के साथ भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के जयकारों से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया। शोभायात्रा से पूर्व मंदिर परिसर में विधिवत पूजा अर्चना की गई। मंदिर के पुजारी सुनील दत शास्त्री के सानिध्य में विद्वान ब्राह्मणों द्वारा अनुष्ठान में भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया। नगर में निकाली गई यात्रा शिव मंदिर से शुरू होकर बेरी गेट, अंबेडकर चौक, पुराना बस स्टैंड से होते हुई मंदिर परिसर में संपन्न हुई। शोभा यात्रा का जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया और प्रसाद ग्रहण किया। शोभायात्रा में भगवान की मूर्ति को विशेष रूप से सजाया गया जो आकर्षण का केंद्र रही। पंडित सुनील दत्त शास्त्री ने बताया कि शिव परिवार की पुनः पुर्नस्थापना के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजन किया गया। उन्होंने कहा कि महाशिवरात्रि पर जलाभिषेक करने का विशेष महत्व है। महाशिवरात्रि के दिन सच्चे मन से की गई पूजा और उपवास व्यक्ति के जीवन में सुख और शांति लेकर आता है। यह पर्व भक्ति, विश्वास और आत्मिक जागरण का अनोखा संगम है।

अभिभावकों और शिक्षकों ने की चर्चा

कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पीटीएम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना में पीटीएम का आयोजन किया गया। मीटिंग में अभिभावकों ने अपने बच्चों की आदतों, रुचियों, शैक्षिक प्रदर्शन एवं समग्र विकास की जानकारी शिक्षकों से प्राप्त की। अभिभावकों ने विद्यालय की शिक्षण पद्धति, अनुशासन और गतिविधियों की सराहना करते हुए विद्यालय परिवार का आभार जताते हुए अपने बच्चों की शिक्षा संबंधी सकारात्मक सुझाव भी दिए। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने अभिभावकों से कहा कि बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए इस प्रकार की बैठकों का आयोजन आवश्यक है।

झज्जर। पीटीएम में शनिवार को शिक्षकों से मिलकर बच्चों की शैक्षणिक प्रगति की जानकारी लेते अभिभावक। फोटो: हरिभूमि

जानलेवा हमला मामले में आरोपी दो दिन के पुलिस रिमांड पर

झज्जर। सीआईए की एक टीम द्वारा गांव रेढूवास में युवक पर जानलेवा हमला करने मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। सीआईए प्रभारी इंस्पेक्टर कर्मवीर ने बताया कि पकड़े गए आरोपी की पहचान नसीब निवासी रेढूवास जिला झज्जर के तौर पर की गई है। आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को पूछताछ के लिए दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

झज्जर। पकड़ा गया आरोपी पुलिस टीम के साथ।

करंट लगने से युवक की मौत

बहादुरगढ़। उत्तर प्रदेश मूल के एक युवक की बहादुरगढ़ में करंट लगने से मौत हो गई। पानी की रॉड के संपर्क में आने से वह हादसे का शिकार हुआ। पुलिस ने पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू करा दी है। घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की गई है। मृतक की पहचान करीब 22 वर्षीय दिलशाद के रूप में हुई है। यूपी मूल का दिलशाद यहां रणजीत कॉलोनी में अपने दो दोस्तों के साथ किराये पर रह रहा था। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार को वह कमरे में अकेला था। पानी गर्म करने के लिए रॉड लगाई गई थी। उसका शरीर रॉड के संपर्क में आया तो करंट की चपेट में आ गया। समय रहते किसी की नजर नहीं पड़ सकी। जब उसका साथी कमरे में आया तो देर हो चुकी थी। आनन-फानन में दिलशाद को अस्पताल में ले जाया गया, जहां उसको मृत घोषित कर दिया गया।

कसार में तबीयत बिगड़ने से महिला की गई जान

बहादुरगढ़। गांव कसार में तबीयत बिगड़ने से महिला की मौत हो गई। मृतका की पहचान करीब 51 वर्षीय मीरा देवी के रूप में हुई है। मूलतः उत्तर प्रदेश की मीरा यहां कसार में परिवार सहित किराये पर रहती थी। शनिवार की दोपहर को वह कमरे में अकेली थी। इसी दौरान उसकी तबीयत बिगड़ गई। किसी की नजर पड़ी तो उसे संभाला गया और नागरिक अस्पताल में ले जाई गई। अस्पताल में डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दी। उसके मुंह से झाग निकले हुए थे। कोई विषैला पदार्थ निगलने से तबीयत बिगड़ी या कोई और वजह रही, ये अभी स्पष्ट नहीं है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मामले का खुलासा हो पाएगा। परिजनों के बयान के आधार पर सेक्टर 6 थाना पुलिस मामले में कार्रवाई करेगी।

18 को प्रदर्शन करेगा एआईकेकेएमएस

बहादुरगढ़। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के कार्यकर्ता तथा समर्थक विभिन्न मांगों को लेकर बुधवार 18 फरवरी को झज्जर के लघु सचिवालय में इकट्ठे होकर धरना प्रदर्शन करेंगे और उपायुक्त के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौपेंगे। यह जानकारी देते हुए संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अनूपसिंह मातनहेल तथा सचिव जयकरण मांडौठी ने बताया कि नाजायज शर्तें थोपकर बुढ़ापा पेंशन बंद करने के विरोध में, बुढ़ापा पेंशन बढ़ा कर 5 हजार रुपए महीना करने तथा प्राइवेट बसों में विद्यार्थियों को छूट और बुजुर्गों का आधा किराया लागू करने की मांग को लेकर संगठन प्रदर्शन करेगा। उन्होंने कहा कि अब तो सरकार ने जनता के दबाव में काटी गई पेंशन जारी कर दी है, लेकिन शर्तें तो बरकरार हैं और कभी भी लागू की जा सकती हैं। शर्तें लगाकर बुढ़ापा पेंशन बंद करना बुजुर्गों का अपमान है। इसी तरह, सरकारी मिलीभगत से प्राइवेट बसों में विद्यार्थियों के किराए में छूट और बुजुर्गों का आधा किराया बन्द कर दिया गया है।

शामलात भूमि विवाद को लेकर सीएम से मिले संजीव सैनी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

भाजपा लाभार्थी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक संजीव सैनी ने शनिवार को दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में मुख्यमंत्री नायब सैनी से मुलाकात की। इस दौरान संजीव सैनी ने शामलात जमीन से जुड़े जटिल और पुराने विवाद को सुलझाने की मांग की।संजीव सैनी ने मुख्यमंत्री को इस मुद्दे से होने वाली जन-परेशानियों से अवगत कराया। मामले की गंभीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री ने तुरंत संज्ञान लिया और संबंधित अधिकारियों को इस विवाद का जल्द से जल्द निवारण करने के आदेश दिए। संजीव ने कहा कि शामलात जमीन का विवाद सुलझने से बहादुरगढ़ में विकास की नई राहें खुलेंगी और हजारों परिवारों को इसका सीधा लाभ मिलेगा।

बहादुरगढ़। सीएम नायब सैनी से मुलाकात करते संजीव सैनी।

स्कॉलरशिप टेस्ट के द्वितीय चरण में 1315 विद्यार्थियों ने दी परीक्षा

- प्रथम चरण के मेगा टेस्ट में भी 1254 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में शनिवार को मेगा स्कॉलरशिप कम एडमिशन टेस्ट के द्वितीय चरण का आयोजन किया गया। टेस्ट में निकटवर्ती गांवों से 1315 विद्यार्थियों ने अपनी बौद्धिक क्षमता को अजमाने के लिए परीक्ष दी। एचडी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि जनवरी माह में आयोजित प्रथम चरण के मेगा स्कॉलरशिप टेस्ट में में भी 1254 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी। उन्होंने विद्यार्थियों और अभिभावकों स्कूल की उपलब्धियों से अवगत कराया। इस मौके पर एचडी ग्रुप सचिव विशाल नेहरा व हेमंत गुलिया ने भी नए सत्र में दी जा रही अनेक आधुनिक सुख-सुविधाओं से नवागन्तुक विद्यार्थियों को अवगत कराया।

झज्जर। एचडी स्कूल में स्कॉलरशिप टेस्ट देते विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में विस्तार व्याख्यान का आयोजन

आत्मविश्वास, व्यक्तित्व प्रस्तुति व व्यवहारिक कौशल से इंटरव्यू की चुनौती कर सकते हैं पार

- असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. कमल कुमार रंगा ने विद्यार्थियों को प्रभावी बायोडाटा तैयार करने की सही विधि समझाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. कमल कुमार रंगा ने विद्यार्थियों को प्रभावी बायोडाटा (रिज्यूमे) तैयार करने की सही विधि समझाई। प्राचार्या डॉ. सांवता पुनिया के दिशानिर्देशन में प्लेसमेंट सेल इंचार्ज डॉ. अश्वनी कुमार द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया। बहादुरगढ़ राजकीय महाविद्यालय से आए डॉ. कमल कुमार रंगा ने बायोडाटा में शामिल की जाने वाली आवश्यक जानकारियों तथा सामान्य त्रुटियों से बचने के उपायों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आत्मविश्वास, संचार कौशल, व्यक्तित्व प्रस्तुति, सामान्य प्रश्नों के उत्तर देने की रणनीति और व्यवहारिक कौशल समेत इंटरव्यू की तैयारी के पहलुओं पर भी उपयोगी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि सही तैयारी, सकारात्मक दृष्टिकोण और निरंतर अभ्यास से इंटरव्यू की चुनौतियों को सफलतापूर्वक पार किया जा सकता है। मौके पर डॉ अनीता दलाल, मोहित, डॉ. मनोज कुमार, देवेंद्र, विजय व गोविंद उपस्थित रहे।

बहादुरगढ़। छारा कॉलेज में विद्यार्थियों को जानकारी देते डॉ. कमल कुमार रंगा। फोटो: हरिभूमि

सीबीएसई परीक्षा के मद्देनजर धारा 163 लागू

झज्जर। जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने 17 फरवरी से आयोजित हो रही सीबीएसई की 10वीं व 12वीं की परीक्षाओं को शांतिपूर्ण तरीके से करवाने के मद्देनजर परीक्षा केंद्र के 200 मीटर की परिधि में धारा 163 लागू की है। जिलाधीश ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के तहत शनिवार को आदेश जारी करते हुए परीक्षा केंद्रों

के आसपास पांच या इससे अधिक व्यक्तियों के एकत्रित होने, हथियार जैसे विस्फोटक, तलवार, गंडासा, लाठी, बरछा, कुल्हाड़ी, जेली, चाकू तथा अन्य हथियार आदि लेकर चलने पर प्रतिबंध लगाया गया है। 17 फरवरी से 11 अप्रैल तक प्रतिदिन सुबह 10 बजे से दोपहर 2:30 बजे तक प्रभावी रहेगा। आदेशों का उल्लंघन करने पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 223 के तहत दंडित किया जाएगा।

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी

लोकमित्र गौतम

पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

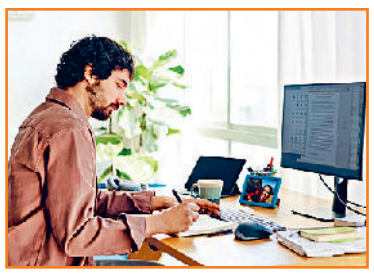

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दूनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

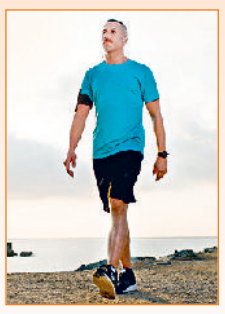

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

हयूमन नेचर

शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

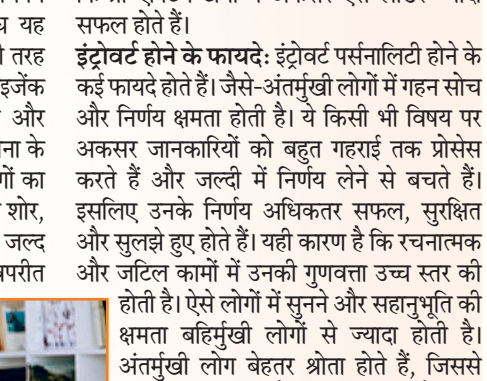

वासंती दोहे

घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा,
मूल्य: 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल
शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम, आंध्र प्रदेशः यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम, तमिलनाडुः तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडुः तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै, तमिलनाडुः मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निमाण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति
अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

सुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सवः 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्वः लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्वः लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पानः लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रमः लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन
प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंदः फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स सेः शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांडः हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुकः शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

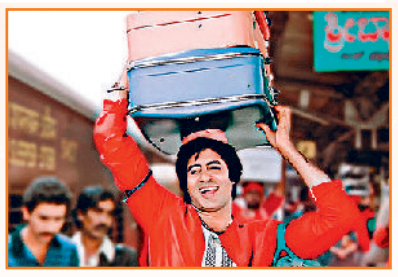
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड
अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नामः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेनः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शनः पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्यः फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

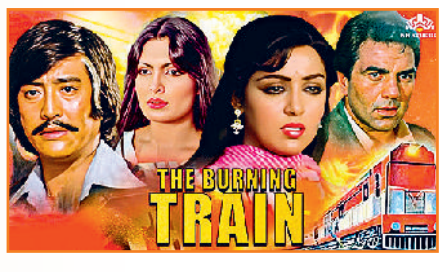

ट्रेन पर आधारित गीतः ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *